MPPSC

मुख्य परीक्षा

पेपर – 5

Awarded.for
Re¿ult0reiilédtAñade'my
For UPSC/MPP5C-2019
by Kamal Ijath\5M .P)

Awarded fit
Leading E-Learning
Academy of MP-2018
by **Shivraj Singh Chouhan** (CM M.P.)

स्थापना पंजीयन क्रमांक : C/177429

शर्मा एकेडमी®

an Institute for IAS/IPS, MPPSC

© Surendra Sharma (Sharma Academy) all rights reserved.
This E-book is Proprietary & Copyrighted Material of Sharma Academy. Any reproduction in any form, electronic, mechanical, photocopying, recording physical or otherwise, mode on public forum etc will lead to infringement of Copyright of Sharma Academy and will attract penal actions including FIR and claim of damages under Indian Copyright Act 1957

MPPSC Mains Paper 5

सामान्य हिन्दी एवं व्याकरण	पेज नं.
(क) लघुत्तरीय प्रश्न	
(ख) अलंकार (2) – शब्दालंकार – अनुप्रास, यमक, श्लेष	
अर्थालंकार – उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा।	
अनुवाद वाक्यों का – हिंदी से अंग्रेजी एवं अंग्रेजी से हिंदी (6)	
(1) संधि (9) **एवं समास** (18) **(2) विराम चिह्न** (24)।	
प्रारंभिक व्याकरण शब्दावलियाँ –	
1. प्रशासनिक परिभाषिक शब्दावली (हिंदी/अंग्रेजी) (27)	
2. मुहावरें एवं कहावतें (30)।	
3. विलोम शब्द (39)।	
4. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (45)।	
5. तत्सम एवं तद्भव शब्द (50)।	
6. पर्यायवाची शब्द (53)।	
7. मानक शब्दावली (58)।	
अपठित गद्यांश (73)।	
पल्लवन– रेखांकित अथवा दी गई पंक्तियों का भाव–पल्लवन (76)।	
संक्षेपण –गद्यांश का एक तिहाई शब्दों में संक्षेपण (80)।	

अलंकार

'अलंकरोति इति अलंकार' अलंकार शब्द का शाब्दिक अर्थ आभूषण होता है। साहित्य/काव्य में अलंकार का अर्थ 'सुशोभित और सुसज्जित करने वाला' के रूप में लिया जाता है। दूसरे शब्दों में, जिस विधान द्वारा काव्य की शोभा बढ़ती है उसे अलंकार कहते हैं। जिस प्रकार आभूषण शरीर की शोभा व सौंदर्य को बढ़ाने का कार्य करते हैं, उसी प्रकार अलंकार भाषा–रूपी काव्य–शरीर के सौंदर्य का बढ़ाते हैं।
आचार्य दण्डी ने 'अलंकार' को परिभाषित करते हुए कहा है – ''काव्य शोभा करान् धर्मानलंकारान् प्रचक्षते'' अर्थात् काव्य के शोभा विधायक/बढ़ाने वाले धर्म का नाम अलंकार है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अलंकार को इस प्रकार परिभाषित किया है कि, ''भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप, गुण, क्रिया का अधिक तीव्र अनुभव कराने में कभी–कभी सहायक होने वाली उक्ति ही अलंकार है।'' काव्य में भाषा – सौंदर्य–विधान मात्र ही अलंकार की विशेषता नहीं है, बल्कि भावोत्कर्ष और रस–भावोदीप्ति विधान भी अलंकार की विशेषता है।
भाषा, भाव तथा शैली ये तीन ही काव्य के मुख्य अंग माने जाते हैं। इसमें भी भाषा को ज्यादा प्रमुखता प्रदान की गयी है, क्योंकि भाषा ही वह माध्यम है जिसकी सहायता से भाव प्रकट होते हैं। काव्य में भाव, भाषा के रूपों में अर्थात् शब्द अथवा अर्थ के रूप में उद्घाटित होते हैं, भाषा के इन्हीं रूपों को आधार बनाकर अलंकार के तीन भेद किये गये हैं। काव्य में शब्द विधान से उत्पन्न सौंदर्य को **'शब्दालंकार'**, अर्थ विधान से उत्पन्न सौंदर्य को **'अर्थालंकार'** तथा शब्द अर्थ दोनों के विधान से उत्पन्न सौंदर्य को **'उभयालंकार'** कहते हैं।

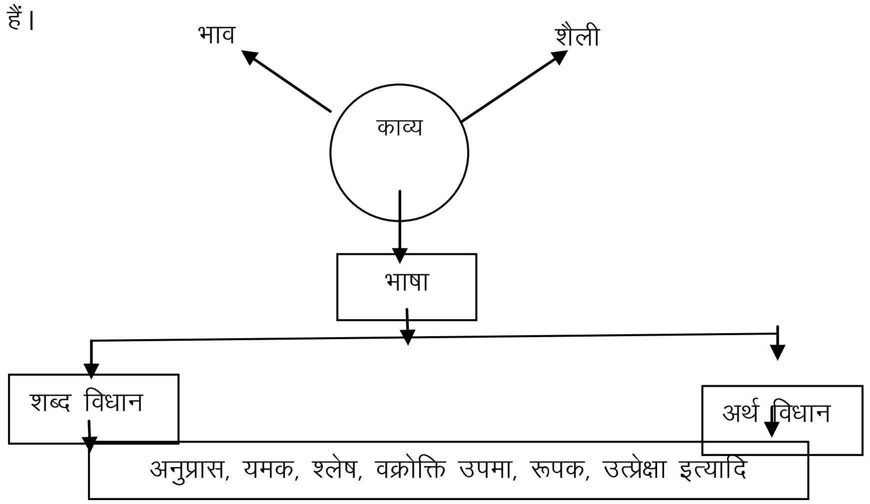

इन अलंकारों का विस्तृत परिचय प्रासांगिक उदाहरणों सहित अग्रवत है–

(1) शब्दालंकार

काव्य में जब शब्द प्रयोग के माध्यम से सौंदर्य/चमत्कार उत्पन्न होता है, तब वहाँ 'शब्दालंकार' होता है। शब्दालंकार में भाषा के बाह्य सौंदर्य का विधान होता है, जैसे –
'सो सुख सुजय सुलभ मोहि स्वामी'।
विद्वानों ने शब्दालंकार के कई भेद किये हैं, जिनमें अनुप्रास, यमक, श्लेष तथा वक्रोक्ति अलंकार ही प्रमुख है, जिनका विवरण निम्नलिखित हैं –

- **अनुप्रास अलंकार** –

जब किसी पद या वाक्य में एक ही वर्ण की आवृत्ति कई बार होती है, तब वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है, जैसे –
'तरनि–तनूजा तट तमाल तरूवर बहु छाए।'
अनुप्रास अलंकार के 5 भेद माने गये हैं –
(i) छेकानुप्रास (ii) वृत्यानुप्रास (iii) लाटानुप्रास (iv) श्रुत्यानुप्रास (v) अंत्यानुप्रास।

(i) **छेकानुप्रास अलंकार** – किसी पंक्ति में, जहाँ वर्ण की आवृत्ति एक बार हुई हो, अर्थात् कोई वर्ण केवल दो बार आया हो, वहाँ छेकानुप्रास अलंकार होता है, जैसे –
जेहि सुमिरत सिधि होय, गन–नायक कविवर बदन।
करहु अनुग्रह सोइ, बुद्धि–रासि सुभ गुन–सदन।।

(ii) **वृत्यानुप्रास अलंकार** – जहाँ कोमला, परूषा तथा उपनागरिका वृत्तियों के अनुसार किसी वर्ण की आवृत्ति कई बार होती है, वहाँ वृत्यापुप्रास अलंकार होता है, जैसे–

1. **तरनि–तनूजा तट तमाल तरूवर बहु छाए।**
   झुके कूल सो जल परसन हित मनहुँ सुहाए।।

2. **कंकन किकिंनि नुपुर, धुनि सुनि।**
कहत लखन सन राम हृदय गुनि।।

नोट – वर्णों और शब्दों की विशेष रचना–पद्धति को वृत्ति कहते हैं। कोमला, परूषा तथा उपनागरिका ये तीन प्रमुख वृत्तियाँ हैं। य, र, ल, व, स आदि कोमल अक्षरों की जहाँ प्रधानता हो, वहाँ 'कोमला', ओज भाव को व्यक्त करने वाले कठोर शब्द जैसे ट वर्ग के वर्ण अथवा द्वित्व वर्ण की जहाँ प्रधानता हो, वहाँ 'परूषा' तथा जहाँ सानुनासिक वर्ण आते हैं, वहाँ 'उपनागरिका' वृत्ति होती है।

(iii) **लाटानुप्रास अलंकार –** जब किसी काव्य पंक्ति में किसी पद अथवा वाक्य खण्ड का दुहराव/आवृत्ति उसी अर्थ में हो, परंतु अन्वय अथवा तात्पर्य में भेद हो, तब वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है, जैसे –

1. **राम हृदय जाके नहीं, विपति सुमंगल ताहि।**
राम हृदय जाके, नहीं विपति सुमंगल ताहि।।
2. **नाचत रसाल मन–मोर हरि–यारी मैं तो,**
नाचत इतै है मन मोर हरियाली में।

(iv) **श्रुत्यानुप्रास अलंकार –** जहाँ एक ही उच्चारण स्थान (तालु, कंठ आदि) से उच्चारित होने वाले वर्णों की आवृत्ति हो, वहाँ श्रुत्यानुप्रास अलंकार होता है, जैसे–

1. **पाप प्रहार, प्रगट भइ सोई। भरी क्रोध जल जाई न जोई।**
2. **तुलसीदास सीदत निसदिन देखत तुम्हारि निठुराई।**

(v) **अन्त्यानुप्रास अलंकार** – जहाँ काव्य पंक्ति के चरणांत में समान वर्णों की आवृत्ति होती है, वहाँ अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है, जैसे –

रघुकुल रीति सदा चलि आई।
प्राण जाए पर वचन न जाई।

➢ यमक अलंकार

जहाँ पर कोई शब्द/पद एक से अधिक बार आया हो, परंतु वह प्रत्येक स्थान पर भिन्न–भिन्न अर्थ प्रकट कर रहा हो, तब वहाँ यमक अलंकार होता है, जैसे–

1. **सूर–सूर तुलसी ससी उडगन केशवदास।**
अब के कवि खद्योत सम जहँ–तहँ करत प्रकास।।
2. **तो पर वारौं उरबसी, सुनु राधिके सुजान।**
तु मोहन के उर बसी, व्है उरबसी समान।।

➢ श्लेष अलंकार

यदि किसी काव्य पंक्ति में कोई एक विशिष्ट शब्द एक ही बार आये, परंतु वह भिन्न–भिन्न अर्थ व्यक्त कर रहा हो, तब वहाँ श्लेष अलंकार होता है, जैसे –